

नरसंहार / जनसंहार के दस चरण

* नरसंहार के स्थान पर जनसंहार शब्द का भी उपयोग किया जा सकता है। दोनों का अर्थ जेनोसाइड होता है।

* सयुक्त राष्ट्र = यू.एन.

ग्रेगरी स्टैंटन

नरसंहार एक ऐसी प्रक्रिया है जो दस चरणों में विकसित होती है जो की अनुमानित हैं लेकिन अपराजेय नहीं। प्रत्येक चरण में, निवारक उपाय इसे रोक सकते हैं। यह प्रक्रिया रैखिक नहीं है। चरण एक साथ हो सकते हैं। तार्किक रूप से, बाद के चरण पहले के चरणों के बाद आते हैं। लेकिन पूरी प्रक्रिया के दौरान सभी चरण जारी रहते हैं।

१) वर्गीकरण

सभी संस्कृतियों में जातीयता, नस्ल, धर्म, या राष्ट्रीयता द्वारा लोगों को "हमें और उन्हें" में भेद करने की श्रेणियां हैं जैसे : जर्मन और यहूदी, हुतु और तुत्सी। जिन समाजों में मिश्रित श्रेणियों की कमी होती है जैसे रवांडा और बुरुंडी में , उनमें नरसंहार होने की संभावना सबसे अधिक है। वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण वर्गीकरण में से एक राष्ट्र की नागरिकता है। किसी भी समूह की नागरिकता छीन लेना समूह के नागरिकों के मानव अधिकार अस्वीकार करने का एक कानूनी तरीका है। नाज़ी जर्मनी में यहूदियों और रोमा के नरसंहार की ओर पहला कदम उनकी जर्मन नागरिकता को छीनने के कानून थे। बर्मा के १९८२/ 1982 के नागरिकता कानून ने रोहिंग्याओं को राष्ट्रीय नागरिकता से बाहर कर दिया। भारत के नए नागरिकता कानून मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता देने से इनकार करता है।

इस प्रारंभिक चरण में मुख्य निवारक उपाय सार्वभौमिक संस्थानों को विकसित करना है जो जातीय या नस्लीय विभाजन को पार करते हैं और जो सहिष्णुता और अमन को बढ़ावा देते हैं।

२) प्रतीकात्मकता

दूसरे चरण में अन्य समूह को नाम या प्रतीकों से अलग किया जाता है। हम लोगों को "यहूदी" या "जिप्सी" नाम देते हैं, या उन्हें रंगों या पोशाक से अलग करते हैं। प्रतीकों को समूहों के सदस्यों के लिए लागू कर दिया जाता है जैसे नाज़ी शासन के तहत यहूदियों के लिए पीला सितारा। घृणा के साथ मिल कर प्रतीकात्मकता नरसंहार के लिए रास्ता बनाती है।

प्रतीकात्मकता का मुकाबला करने के लिए, घृणा के प्रतीकों और नफरत भरे भाषण को गैरकानूनी घोषित किया जा सकता है। समस्या यह है कि कानून अकेले बदलाव नहीं ला सकता जब तक सांस्कृतिक प्रवर्तन न आये। शब्द हुतु और तुत्सी को १९८० /1980 में बुरुंडी में निषिद्ध शब्द घोषित कर दिया था मगर कोड शब्दों ने जल्द ही उनकी जगह ले ली। हालांकि, व्यापक रूप से अस्वीकार करने पर घृणा के प्रतीकों का खंडन शक्तिशाली हो सकता है। जैसे बल्गारिया में था, जहां सरकार ने पर्याप्त पीले बैज की आपूर्ति करने से इनकार कर दिया और कम से कम अस्सी प्रतिशत यहूदियों ने उन्हें नहीं पहना, जिससे उन प्रतीकों की घृणा फैलाने की शक्ति बहुत कम हो गयी ।

३) भेदभाव

एक प्रबल समूह कानून, रिवाज़ और राजनीतिक शक्ति का उपयोग करके दूसरे समूह के अधिकारों को अस्वीकार करता है। शक्तिहीन समूह के पूर्ण नागरिक अधिकार, मतदान अधिकार या नागरिकता भी छीन ली जा सकती है। प्रमुख समूह एक बहिष्कृत विचारधारा से प्रेरित है जो कम शक्तिशाली समूहों को उनके अधिकारों से वंचित करता है । उदाहरणों में नाज़ी जर्मनी में १९३५ /1935 के न्यूरेम्बर्ग कानून शामिल हैं, जिन्होंने यहूदियों से उनकी जर्मन नागरिकता छीन ली, और सरकारी दफ्तरों और विश्विद्यालयों में उनके रोजगार पर प्रतिबंध लगा दिया। म्यांमार में रोहिंग्या मुस्लिम्स के २०१७/ 2017 के नरसंहार से पहले उनसे उनकी नागरिकता ही छीनी गयी थी।

भेदभाव के खिलाफ रोकथाम का अर्थ है एक समाज में सभी समूहों के लिए पूर्ण राजनीतिक सशक्तीकरण और नागरिकता अधिकार होने चाहिए। राष्ट्रीयता, जातीयता, नस्ल या धर्म के आधार पर भेदभाव को खारिज किया जाना चाहिए। यदि उनके अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है, तो व्यक्तियों को राज्य, निगमों और अन्य व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार होना चाहिए।

४) अमानवीकरण

एक समूह दूसरे समूह की मानवता को नकारता है। इसके सदस्यों की तुलना जानवरों, कीड़ों या बीमारियों से की जाती है। हत्या के खिलाफ सामान्य मानव विद्रोह समाप्त हो जाता है। पीड़ित समूह को अपमानित करने के लिए रेडियो, टीवी, समाचार पत्रों और सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है। इस नफरत भरे प्रचार को स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में भी शामिल किया जा सकता है। बहुसंख्यक समूह को दूसरे समूह को अपने समाज से अलग करना सिखाया जाता है। उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि "हम उनके बिना बेहतर हैं।" शक्तिहीन समूह इतना अधिक उत्पीड़ित हो सकता है कि उन्हें वास्तव में नामों की बजाय संख्या से पहचाना जाए , जिस तरह यहूदियों को मृत्यु शिविरों में संख्या दे दी गयी थी।

अमानवीयकरण का मुकाबला करने के लिए नेताओं को अभद्र भाषा के इस्तेमाल की निंदा करनी चाहिए और इसे सांस्कृतिक रूप से अस्वीकार्य बनाना चाहिए। जनसंहार करने वाले नेताओं पर राष्ट्रीय अदालतों में मुकदमा चलाया जाना चाहिए। उन्हें अंतरराष्ट्रीय यात्रा से प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए और उनके विदेशी वित्त को फ्रीज़ कर दिया जाना चाहिए।

५) संगठन

जनसंहार हमेशा संगठित होता है, आमतौर पर राज्य द्वारा, अक्सर राज्य को जिम्मेदारी से बचाने के लिए मिलिशिया का उपयोग किया जाता है (दारफुर में जंजावीद)। कभी-कभी संगठन अनौपचारिक होता है (आरएसएस उग्रवादी)। हत्याओं के लिए योजनाएँ बनाई जाती हैं। नरसंहार अक्सर गृह युद्ध या अंतर्राष्ट्रीय युद्धों के दौरान होता है। राजनीतिक नेताओं के विरोध के संदेह में लोगों की गिरफ्तारी, यातना, और हत्या करने के लिए राज्य गुप्त पुलिस का आयोजन करते हैं।

संघटित सामूहिक हत्याओं का मुकाबला करने के लिए, नरसंहार मिलिशिया में सदस्यता को गैरकानूनी घोषित किया जाना चाहिए। उनके नेताओं को विदेश यात्रा के लिए वीज़ा नकार देना चाहिए और उनकी विदेशी संपत्तियों को फ्रीज़ कर दिया जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र को नरसंहार में शामिल देशों की सरकारों और नागरिकों के हथियारों के उपयोग को विनियमित करना चाहिए, मानव अधिकारों के उल्लंघन की जांच के लिए आयोग बनाने चाहिए, जैसा कि रवांडा नरसंहार के बाद हुआ था। राष्ट्रीय कानूनी प्रणालियों को घृणा प्रेरित अपराधियों और समूहों पर मुकदमा चलाना चाहिए और उन्हें निरसस्त्र करना चाहिए।

६) धुवीकरण

चरमपंथी और नफरत फैलाने वाले लोग दोनों समूहों के बीच दरार पैदा करके उन्हें अलग करने की कोशिश में जुटे रहते हैं। अंतर्जातीय विवाह या सामाजिक संपर्क के लिए कानून निषिद्ध हो सकते हैं। चरमपंथी सबसे पहले नरमपंथियों को डराने और चुप कराने का लक्ष्य करते हैं। अक्सर नरमपंथियों के प्रयासों से नरसंहार को रोकना संभव होता है, इसलिए सबसे पहले उन्हें गिरफ्तार करके मार दिया जाता है। इसके बाद लक्षित समूहों के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है या उनकी हत्या कर दी जाती है। प्रबल समूह आपातकालीन कानूनों को लागू करता है जिससे उसे लक्षित समूह के ऊपर पूरी तरह से हावी होने की अनुमति मिलती है। कानून नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता को नष्ट करते हैं।

रोकथाम का मतलब नरमपंथी और लक्षित समूह के नेताओं के लिए सुरक्षा संरक्षण या मानवाधिकार समूहों को सहायता देना हो सकता है। चरमपंथियों की संपत्तियों को ज़ब्त किया जाना चाहिए, और अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए फ्रीज़ से इनकार कर दिया जाना चाहिए। विपक्षी समूहों के सदस्यों की

गिरफ्तारी पर कड़ी आपत्ति जताई जानी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो लक्षित समूहों को अपना बचाव करने के लिए सशस्त्र कर देना चाहिए। राष्ट्रीय सरकार के नेताओं को घृणा फैलाने वाले भाषण को अस्वीकार करना चाहिए। शिक्षकों को सहिष्णुता सिखानी चाहिए।

७) तैयारी

राष्ट्रीय या अपराधी समूह के नेता यहूदी, अर्मेनियाई, तुत्सी या अन्य लक्षित समूह के लिए "अंतिम समाधान" की योजना बनाते हैं। वे अक्सर अपने इरादों पर पर्दा डालने के लिए व्यंजना का उपयोग करते हैं, जिसमें वह अपने लक्ष्यों को "जातीय शुद्धि," "शुद्धि," या "आतंकवाद का विरोध" का नाम देते हैं। वे सेनाओं का निर्माण करते हैं, हथियार खरीदते हैं और अपने सैनिकों और मिलिशिया को प्रशिक्षित करते हैं। नेता आत्मरक्षा के रूप में नरसंहार को छिपाते हैं और दावा करते हैं कि "अगर हम उन्हें नहीं मारेंगे, तो वे हमें मार देंगे"। दूसरे समूह का भय पैदा करने के उद्देश्य से भड़काऊ बयानबाजी में अचानक से बहुत बढ़ाव आता है।

तैयारी की रोकथाम के लिए कमीशन बैठाने चाहिए। नरसंहार समझौते अनुच्छेद ३/ 3 के तहत इसमें नरसंहार का मुकदमा चलाने और नरसंहार करने की साजिश शामिल होनी चाहिए। राष्ट्रीय कानून प्रवर्तन अधिकारियों को नरसंहार की योजना बनाने वाले समूहों के नेताओं को गिरफ्तार करना और उन पर मुकदमा चलाना चाहिए।

८) उत्पीड़न

पीड़ितों को उनकी राष्ट्रीय, जातीय, नस्लीय या धार्मिक पहचान के कारण पहचाना और अलग किया जाता है। पीड़ित समूह के सबसे बुनियादी मानव अधिकारों को व्यवस्थित रूप से अतिरिक्त न्यायिक हत्याओं, यातना और जबरन विस्थापन के माध्यम से उल्लंघन किया जाता है। मौत की सूची तैयार की जाती है। राज्य प्रायोजित जनसंहार में, पीड़ित समूहों के सदस्यों को पहचान प्रतीकों को पहनने के लिए मजबूर किया जा सकता है। उनकी संपत्ति अक्सर ज़ब्त की जाती है। कभी-कभी उन्हें यहूदी बस्ती में बंद कर दिया जाता है या एकाग्रता शिविरों में भेज दिए जाते हैं। समूह को धीरे-धीरे नष्ट करने के लिए उन्हें जानबूझकर पानी या भोजन जैसे संसाधनों से वंचित किया जाता है। जबरन नसबंदी या गर्भपात के माध्यम से समूह की जनसंख्या को बढ़ने से रोकने के लिए कार्यक्रम लागू किए जाते हैं। बच्चों को उनके माता-पिता से जबरन लिया जाता है। इस चरण में जनसंहार हत्याएं शुरू हो जाती हैं। अपराधी देखते हैं कि इस तरह के जनसंहार का अंतरराष्ट्रीय विरोध होता है या नहीं। यदि कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है, तो उन्हें

लगता है कि वे जनसंहार बिना किसी रुकावट के कर सकते हैं और उसके आरोप से भी बच कर निकल सकते हैं।

इस स्तर पर, एक लगता है आपातकाल घोषित किया जाना चाहिए। क्षेत्रीय गठबंधनों या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद या संयुक्त राष्ट्र महासभा की राजनीतिक इच्छाशक्ति जुटाकर जोरदार कूटनीति, लक्षित आर्थिक प्रतिबंध, और सशस्त्र अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप तैयार किया जाना चाहिए। पीड़ित समूह को उसकी आत्मरक्षा के लिए तैयार करने के लिए सहायता प्रदान की जानी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र और निजी राहत समूहों को शरणार्थियों की आने वाली अपरिहार्य ज्वार के लिए मानवीय सहायता की तैयारी करनी चाहिए।

९) तबाही

तबाही शुरू होती है, और बहुत जल्द जिन हत्याओं को हम कानूनी तौर पर "नरसंहार या जनसंहार" का नाम देते हैं वह शुरू हो जाती है। जब यह राज्य द्वारा प्रायोजित होता है, तो सशस्त्र बल अक्सर हत्या करने के लिए मिलिशिया के साथ काम करते हैं। जनसंहार का लक्ष्य लक्षित समूह के सभी सदस्यों को मारना है। लेकिन कभी कभी नरसंहार "भाग में" भी प्रायोजित होता है। लक्षित समूह के सभी शिक्षित सदस्यों की हत्या हो सकती है (बुरुंडी १९७२ / 1972)। लड़ाई की उम्र के सभी पुरुषों और लड़कों की हत्या हो सकती है (स्नेब्रेनिका, बोस्निया १९९५ / 1995)। सभी महिलाओं और लड़कियों का बलात्कार हो सकता है (डारफुर, म्यांमार)। महिलाओं के सामूहिक बलात्कार सभी आधुनिक नरसंहारों की विशेषता बन गए हैं। बलात्कार पीड़ित समूह को आनुवंशिक रूप से बदलने और नष्ट करने के साधन के रूप में उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक और धार्मिक संपत्ति का विनाश इतिहास से समूह के अस्तित्व को नष्ट करने के लिए कार्यरत है (आर्मेनिया १९१५/ 1915 – १९२२/ 1922, ISIS २०१४/ 2014 - २०१८ / 2018)।

सक्रिय नरसंहार के दौरान, केवल तेजी से और भारी सशस्त्र हस्तक्षेप नरसंहार को रोक सकता है। वास्तविक सुरक्षित क्षेत्रों या शरणार्थी भागने के गलियारों को भारी सशस्त्र अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के साथ स्थापित किया जाना चाहिए (एक असुरक्षित "सुरक्षित" क्षेत्र ज़्यादा भयानक हो सकता है जहाँ हत्यारे आसानी से एक बार में पूरी आबादी को ख़तम कर सकते हैं)। सशस्त्र हस्तक्षेपों के लिए, संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकृत एक बहुपक्षीय बल को राजनीतिक रूप से संभव होने पर हस्तक्षेप करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र महासभा शांति संकल्प GA Res ३३० /330 (१९५०/ 1950) के तहत कार्रवाई को अधिकृत किया जा सकता है, जो इस तरह के सशस्त्र हस्तक्षेप के लिए पहले भी १३ बार उपयोग किया गया है। यदि

संयुक्त राष्ट्र असमर्थ हो जाए, तो क्षेत्रीय गठबंधनों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अध्याय ८/ VIII के तहत कार्य करना चाहिए। मज़बूत राष्ट्र क्षेत्रीय राज्यों को हस्तक्षेप करने के लिए आवश्यक एयरलिफ्ट, उपकरण और वित्तीय साधन उपलब्ध करा सकते हैं।

१०) इंकार

नरसंहार के आरोपों को इंकार करना अंतिम चरण है जो पूरे समय जारी रहता है और हमेशा नरसंहार का अनुसरण करता है। यह आगे के नरसंहार हत्याओं के सबसे पक्के संकेतकों में से एक है। नरसंहार के अपराधी बड़े पैमाने पर कब्र खोदना शुरू कर देते हैं, शवों को जला देते हैं, सबूतों को छुपाने और गवाहों को डराने की कोशिश करते हैं। वे इस बात से इनकार करते हैं कि उन्होंने कोई भी अपराध किया है, और अक्सर पीड़ितों पर ही दोष दाल देते हैं। नरसंहार के अधिनियमों को काउंटर इंसर्जेंसी के रूप में प्रच्छन्न किया जाता है यदि कोई सशस्त्र संघर्ष या गृहयुद्ध चल रहा हो। अपराधी अपराधों की जांच रुकवा देते हैं, और जब तक वे निर्वासन में भाग नहीं जाते, तब तक सत्ता से संचालित होने तक शासन करते रहे। निर्वासन में, जब तक वे पकड़े नहीं जाते और उनकी जांच के लिए एक न्यायाधिकरण स्थापित नहीं किया जाता, तब तक वे दंडमुक्त बने रहते हैं, जैसे पोल पॉट या ईदी अमीन।

नरसंहार के दौरान और बाद में, वकील, राजनयिक, और अन्य लोग जो बलपूर्वक कार्रवाई का विरोध करते हैं, अक्सर इनकार करते हैं कि ये अपराध नरसंहार की परिभाषा को पूरा करते हैं। वे नरसंहार को "जातीय सफ़ाई" का नाम देने की कोशिश करते हैं। वह हज़ारों हत्याओं को नज़रअंदाज़ करते हुए सवाल उठाते हैं कि क्या एक समूह को नष्ट करने के इरादे को साबित किया जा सकता है। वे दावा करते हैं कि केवल अदालतें यह निर्धारित कर सकती हैं कि क्या नरसंहार हुआ है, "एक उचित संदेह से परे सबूत" की मांग करते हुए, जब रोकथाम के लिए केवल बाध्यकारी सबूत के आधार पर कार्रवाई की आवश्यकता होती है।

इनकार करने के लिए सबसे अच्छी प्रतिक्रिया एक अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण या राष्ट्रीय अदालतों द्वारा सज़ा है। वहां सबूतों को सुना जा सकता है, और अपराधियों को दंडित किया जा सकता है। यूगोस्लाव, रवांडा या सिएरा लियोन ट्रिब्यूनल जैसे ट्रिब्यूनल, कंबोडिया में खमेर रूज पर कारवाही करने वाला ट्रिब्यूनल, या अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय सबसे खराब नरसंहार हत्यारों को रोक नहीं सकते हैं। लेकिन उन्हें गिरफ्तार करने और मुकदमा चलाने की राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ, कुछ को न्याय के घाट उतारा जा सकता है। स्थानीय न्याय, सत्य आयोग और पब्लिक स्कूल शिक्षा भी सुलह और निवारक शिक्षा के रास्ते खोल सकते हैं।